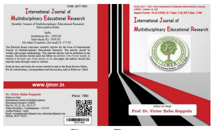
Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer-Peer Reviewed, Refereed & Open Access International Journal - As per UGC Norms
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:4(4), April 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

शिखण्डिनी– एक स्त्री जिसने पुरुषत्व पाया, भाग्य या स्वतंत्र निर्णय -एक विवेचना

प्रतिमा गौतम
शोधार्थी (इतिहास)
डी0जी0पी0जी0 कालेज कानपुर
छत्रपति शाहू जी महाराज
विश्वविद्यालय, कानपुर उ0प्र0
Email : guatampratima219@gmail.com

प्रो0 उपासना वर्मा
प्रोफेसर (इतिहास विभाग)
डी0जी0पी0जी0 कालेज, कानपुर
Email : upasana411@gmail.com

शोध सार

प्रस्तुत शोध पत्र महाकाव्य, महाभारत के उस प्रमुख पात्र के संदर्भ में है, जो बहुत ही विषयों में अद्वितीय है। शिखंडिनी, जिसे हम शिखंडी के नाम से भी जानते हैं। ये पात्र कई संदर्भो में विशिष्ट है। प्रथम, यह भारतीय इतिहास में ज्ञात सबसे प्राचीन ट्रांसमेन हैं, जिनके एक स्त्री से पुरुष के रूप में परिवर्तन का पूर्ण विवरण महाभारत के उद्योग पर्व में मिलता है। द्वितीय विशेषता यह है कि शिखंडी भीष्म की मृत्यु में मुख्य कारण बन महाभारत युद्ध के निर्णयों को पांडवों के पक्ष में सुनिश्चित करते हैं। परंतु यह शोध पत्र शिखंडी के पुरुपत्व की प्राप्ति के संदर्भ में है, ना कि युद्ध के निर्णयों के विपय में। शिखंडी जो पूर्व जन्म में अम्बा थी, उसके अंबा एवं शिखंडी, दोनों ही जीवनों पर दृष्टिपात करके यह समझने का प्रयास किया जा रहा है कि शिखंडिनी का शिखंडी के रूप में परिवर्तन भाग्य द्वारा पूर्व निर्धारित था अथवा वो अंबा के रूप में किए गए उसके निर्णयों का प्रतिफल था।

मुख्य शब्द - अम्बा , शिखण्डिनी , वरदान , भाग्य एवं निर्णय ।

महाकाव्य महाभारत ने न केवल गीता का ज्ञान एवं उस कालखण्ड की राजनीति, संस्कृति एवं समाज का ज्ञान प्रदान किया वरन् कई ऐसे पात्र भी प्रदान किये, जिनके जीवन न केवल व्यक्ति को शिक्षा देते हैं वरन् मार्गदर्शन भी प्रदान करते हैं। इन्हीं अनेकों पात्रों में से एक पात्र है, शिखंडी।

ट्रांसजेंडर समाज के आदिपुरुप कहे जाने वाले शिखंडी का जन्म पांचाल नरेश द्रुपद की पटरानी के गर्भ से एक कन्या के रूप में हुआ था। द्रुपद नरेश की पटरानी को कोई पुत्र न होने के कारण उन दोनों ने शिव की तपस्या कर यह वरदान प्राप्त किया था कि उनके यहाँ एक कन्या का जन्म होगा, जो कि समय आने पर एक पुरुप में परिवर्तित हो जाएगी।

स तु गत्वा च नगरं भार्यामिदमुवाच ह ।।6।।

कृतो यत्नो महादेवस्तपसाऽऽराधितो मया ।

कन्या भूत्वा पुमान् भावी इति चोक्तोऽस्मि शम्भुना ।।7।।

पुनः पुनर्याच्यमानो दिष्टमित्यब्रवीच्छिवः।

न तदन्यच्च भविता भवितव्यं हि तत् तथा ।।8।।

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer-Peer Reviewed, Refereed & Open Access International Journal - As per UGC Norms
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:4(4), April 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

महाभारत– खण्ड–3 उद्योग पर्व

अम्बोपाख्यानपर्व, अप्टाशीत्यधिकशततमोध्यायः

इसी वरदान के परिणामस्वरूप द्रुपद नरेश के यहाँ पर शिखंडिनी का जन्म हुआ। क्योंकि शिव का वरदान अटल सत्य था अतः इस कन्या के जन्म के संबंध में सदैव ही झूठ बोला गया कि पांचाल नरेश के यहाँ राजकुमार का जन्म हुआ है एवं उसका नाम शिखंडी रखा गया है, एवं सभी से यह छुपाया गया कि वह एक कन्या है।

ततः स राजा द्रुपदः प्रच्छन्नाया नराधिप ।।15।।

पुत्रवत् पुत्रकार्याणि सर्वाणि समकारयत् ।

रक्षणं चौव मन्त्रस्य महिषी द्रुपदस्य सा ।।16।।

चकार सर्वयत्नेन ब्रुवाणा पुत्र इत्युत ।

न च तां वेद नगरे कश्चिदन्यत्र पार्षतात् ।।17।।

महाभारत– खण्ड–3 उद्योग पर्व

अम्बोपाख्यानपर्व, अप्टाशीत्यधिकशततमोध्यायः

इस कन्या का पालन पोषण एक राजकुमार की तरह किया गया उसे विभिन्न विद्याओं जैसे कि– लेखन, शिल्प एवं धनुर्विद्या का अभ्यास कराया गया। शिखंडी ने धनुर्विद्या का ज्ञान स्वयं द्रोणाचार्य से प्राप्त किया। शिखण्डी भी स्वयं को स्त्री न समझ सदैव पुरुप की ही भाँति रहता था।

शिखण्ड्यपि महाराज पुंवद् राजकुले तदा ।

विजहार मुदा युक्तः स्त्रीत्वं नैवातिरोचयन् ।।17।।

महाभारत– खण्ड–3 उद्योग पर्व

अम्बोपाख्यानपर्व, अप्टाशीत्यधिकशततमोध्यायः

वह स्वयं एवं उसके माता पिता उसके स्त्रित्व को इतना भूल चुके थे कि कालांतर में उसके युवा होने पर उसके विवाह का प्रस्ताव एक कन्या के साथ रखा गया।

क्रियतामस्य यत्नेन विधिवद् दारसंग्रहः ।

भविता तद्वचः सत्यमिति में निश्चिता मतिः ।।7।।

महाभारत– खण्ड–3 उद्योग पर्व

अम्बोपाख्यानपर्व, अप्टाशीत्यधिकशततमोध्यायः

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer-Peer Reviewed, Refereed & Open Access International Journal - As per UGC Norms
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:4(4), April 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

कालांतर में शिखंडी का विवाह दर्शाण देश के राजा हिरण्यवर्मा की कन्या से संपन्न हुआ। इस प्रकार एक स्त्री शिखण्डिनी, एक कन्या की पति के रूप में वरित हुई, परंतु अभी तक वह स्वयं स्त्री ही थी अतः विवाहोपरांत जब दर्शाण राज की कन्या को यह तथ्य ज्ञात हुआ तो यह सत्य उसकी धाय व दासियों के द्वारा हिरण्यवर्मा तक पहुंचा। इतने बड़े धोखे से रुष्ट हो हिरण्यवर्मा ने पांचाल नरेश द्रुपद को यह संदेश भिजवाया कि अपने एवं अपनी पुत्री के साथ हुए इस धोखे का प्रतिशोध लेने के लिये, वह अपनी सेना के साथ पांचाल पर आक्रमण कर पांचाल नरेश को मंत्रियों संग समाप्त कर देगा– और यह प्रतिज्ञा कर उसने स्वयं सेना सहित पांचाल की ओर प्रस्थान किया। अपने माता पिता एवं राज्य पर संकट आता देख शिखंडिनी अत्यधिक दुखी हुई , जिस पुरुष की भांति वह सोचती रहती एवं जीती है, शारीरिक तौर पर वही पुरुष देह उसकी नहीं है, इसी को इस संकट का कारण समझ उसने अपनी स्त्री देह त्यागने का निर्णय किया।

एवं संभाषमाणौ तु दृष्ट्वा शोकपरायणौ ।

शिखण्डिनी तदा कन्या व्रीडितेव तपस्विनी ।।17।।

ततः सा चिन्तायामास मत्कृते दुःखितावुभौ ।

इमाविति ततश्चक्रे मतिं प्राणविनाशने ।।18।।

महाभारत– खण्ड–3 उद्योग पर्व

अम्बोपाख्यानपर्व, एकनवत्यधिकशततमोध्यायः

इस प्रकार देह त्याग का निर्णय कर शिखंडी ने वन की ओर प्रस्थान किया, जिस वन में वह पहुंची, वह यक्षराज स्थूलकर्ण के संरक्षण में आता था। शिखंडिनी को मृत्यु का वरण करते देख दयालु यक्ष ने वरदान स्वरूप 1 दिन के लिए शिखंडी को अपना पुरुषत्व प्रदान किया। एवं उसका स्त्रित्व स्वयं धारण किया परंतु एक शर्त के साथ कि शिखंडी समय रहते उसका पुरुषत्व लौटाने वापस आए।

स्त्रीलिङ्गं धारिष्यामि तदेवं पार्थिवात्मजे ।

सत्यं में प्रतिजानीहि करिष्यामि प्रियं तव ।।5।।

महाभारत– खण्ड–3 उद्योग पर्व

अम्बोपाख्यानपर्व, द्विनवत्यधिकशततमोध्यायः

इस प्रकार कन्या शिखंडी को पुरुषत्व की प्राप्ति हुई और वह पूर्णतः पुरुष हो, एक पुत्र एवं पति के रूप में परिवर्तित हुई, पुरुष शरीर प्राप्त करने के उपरांत शिखंडी स्वजनों की सुरक्षा के लिए नगर में पहुँचकर अपने पिता को इस शुभ समाचार से अवगत कराया। शिव के वरदान को पूर्ण हुआ देख द्रुपद को अत्यधिक हर्ष हुआ एवं उन्होंने दर्शाण राजा के पास दूत भेजा कि उन्हें किसी के द्वारा गलत सूचना प्राप्त हुई है। उनका पुत्र शिखंडी पूर्णतः पुरुष है। वह उनके शब्दों का विश्वास करें, अन्यथा स्वयं इसकी परीक्षा करवा लें। दर्शाण राज हिरण्यवर्मा ने इस तथ्य के परीक्षण के लिए कुछ अति सुंदरी स्त्रियों को भेजा, जिन्होंने अतिसंतुप्ट होकर दर्शाणराज को सूचना दी कि शिखंडी पूर्ण पुरुष है एवं उसके पुरुपार्थ में किसी प्रकार की कोई त्रुटि नहीं है।

ताः प्रेषितास्तत्त्वभावं विदित्वा

प्रीत्या राज्ञे तच्छशंसुर्हि सर्वम् ।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer-Peer Reviewed, Refereed & Open Access International Journal - As per UGC Norms
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:4(4), April 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

शिखण्डिनं पुरुषं कौरवेन्द्र

दाशार्णराजाय महानुभावम् ।।21।।

महाभारत– खण्ड–3 उद्योग पर्व

अम्बोपाख्यानपर्व, द्विनवत्यधिकशततमोध्यायः

इस सूचना से अत्यधिक प्रसन्न हो एवं अपने जमाता को बहुत सारे उपहार दे, संतुष्ट हो दर्शाण राज अपना योजन सफल कर अपने राज्य लौट गए। कालांतर में अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण करने के लिए यक्षराज स्थूलकर्ण को उसका पुरुपत्व लौटाने के लिए जब शिखंडी वन में वापस गया, तब तक संपूर्ण दृश्य ही परिवर्तित हो चुका था। स्थूलकर्ण ने उसे बताया कि इस समयावधि में यक्षराज कुबेर, स्थूलकर्ण के भवन में पधारे परंतु स्त्रित्त्व में होने के कारण स्थूलकर्ण उनके स्वागत के लिए नहीं पहुंचे एवं इससे रुप्ट हो कुबेर ने स्थूलकर्ण को श्राप दिया कि वह जिस स्त्रित्व के कारण उनके समक्ष उपस्थित होने में असमर्थ हुए हो, जीवन पर्यंत तुम्हे उसी रूप में रहना होगा।

ततोब्रवीद् यक्षपतिर्महात्मा

यस्माददास्त्ववमन्येह यक्षान् ।

शिखण्डिने लक्षणं पापबुद्धे

स्त्रीलक्षणं चाग्रहीः पापकर्मन् ।।46।।

अप्रवृत्तं सुदुर्बुद्धे यस्मादेतत् त्वया कृतम् ।

तस्मादद्य प्रभृत्येव स्त्री त्वं सा पुरुषस्तथा ।।47।।

महाभारत– खण्ड–3 उद्योग पर्व

अम्बोपाख्यानपर्व, द्विनवत्यधिकशततमोध्यायः

अत्यधिक क्षमा मांगने के उपरांत उन्होंने कहा कि शिखंडी की मृत्यु के उपरांत तुम्हारा पुरुपत्व तुम्हारे पास लौट आएगा और यह कहकर स्थूलकर्ण ने शिखंडी को आजीवन उसके पुरुपत्व को धारण करने एवं अपने उद्देश्य को पूर्ण करने का आशीर्वाद देकर जाने की आज्ञा दी। कालांतर में शिखंडी को क्षत्रदेव नामक पुत्र प्राप्त हुआ। महाभारत के युद्ध प्रसंगों में इसका कुछ स्थलों पर उद्धरण मिलता है। इस प्रकार, शिखंडी, जो कि एक स्त्री रूप में उत्पन्न हुई, कालांतर में पुरुपत्व को प्राप्त कर पति, पुत्र एवं पिता बनी। यह प्रसंग भारतीय इतिहास में किसी भी व्यक्ति का लिंग परिवर्तन या ट्रांसमेन बनने का प्रथम साक्ष्य है। प्रथम दृप्या अगर हम देखें तो शिव का वरदान एवं स्थूलकर्ण द्वारा अपने पुरुपत्व का दान एवं जिस समय के लिए स्थूलकर्ण स्त्री स्वरूप में था, उसी समय कुबेर का वहाँ आना एवं स्थूलकर्ण को श्राप मिलना, यह सभी देखकर यह प्रतीत होता है कि यह शिखंडी का भाग्य था कि उसे स्त्री से पुरुप स्वरूप में आना ही था परंतु हम अगर इस कथा को और पीछे जाकर देखें तो यह एक स्त्री अम्बा की स्वतंत्र इच्छा एवं दृढ़ प्रयास का परिणाम है। शिखंडी अपने पूर्व जन्म में काशी नरेश की पुत्री थी, जिसका स्वयंवर हो रहा था। परंतु वह शाल्व नरेश का वरण पहले ही कर चुकी थी एवं स्वयंवर में वरमाला उन्हीं के गले में पहनाने वाली थी, परंतु उस स्वयंवर में से भीष्म ने अंबा का उसकी दोनों बहनों– अंबिका एवं अंबालिका सहित अपहरण कर लिया। क्षत्रिय कुल में अपहरण भी विवाह का एक प्रकार होता था परंतु भीष्म ने यह अपहरण अपने लिए नहीं वरन् अपने छोटे भाई विचित्रवीर्य के लिए किया था। अंबिका एवं अंबालिका ने विचित्रवीर्य को स्वीकार किया परंतु अम्बा जो कि पहले ही शाल्वराज का मन से वरण कर चुकी थी, जब उसने यह बात भीम को बताई तब उन्होंने अम्बा को शाल्वराज के पास भेज दिया परंतु शाल्वराज ने उसे स्वीकार नहीं किया। शाल्वराज से तिरस्कार

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer-Peer Reviewed, Refereed & Open Access International Journal - As per UGC Norms
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:4(4), April 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

पा, अम्बा ने भीष्म से स्वयं को स्वीकार करने की प्रार्थना की परंतु उन्होंने आजीवन ब्रह्मचर्य का व्रत लिया था अतः उन्होंने अम्बा की इस प्रार्थना को स्वीकार नहीं किया। अपने समस्त दुखों का कारण भीष्म को मानकर अम्बा ने भीष्म के संहार का प्रण किया एवं अपने इसी उद्योग को सफल करने के लिए वह भारत वर्ष में तपस्या करती भ्रमण करने लगी।

सर्वथा भागधेयानि स्वानि प्राप्नोति मानवः ।

अनयास्यास्य तु मुखं भीष्मः शान्तनवो मम ।।33।।

सा भीष्मे प्रतिकर्तव्यमहं पश्यामि साम्प्रतम् ।

तपसा वा युधा वापि दुःखहेतुः स मे मतुः ।।34।।

महाभारत– खण्ड–3 उद्योग पर्व

अम्बोपाख्यानपर्व, पञ्चसप्तत्यधिकशततमोध्यायः

कालांतर में वह परशुराम जी को भी भीष्म से युद्ध करने के लिए लेकर आई भीष्म एवं परशुराम का भयंकर युद्ध जब अनिर्णायक रहा तब भी उसने हार नहीं मानी एवं अपनी प्रतिज्ञा को पूर्ण करने के लिए तपस्या करती रही।

गमिष्यामि तु तत्राहं यत्र भीष्मं तपोधन ।

समरे पातयिष्यामि स्वयमेव भृगूद्वह ।।10।।

महाभारत– खण्ड–3 उद्योग पर्व

अम्बोपाख्यानपर्व, षडशीत्यधिकशततमोध्यायः

देवी गंगा से श्राप पाकर जब वह अगले जन्म में आधी अम्बा नदी बनी एवं आधे शरीर से कन्या। तब भी अपने पूर्व जन्म की प्रतिज्ञा को याद कर भीष्म के संहार के लिए एवं स्त्री स्वरूप को त्याग पुरुष स्वरूप को प्राप्त करने के लिए कठोर तपस्या करने में लीन हो गई।

निराहारा कृशा रुक्षा जटिला मलपङ्किनी ।

षण्मासान् वायुभक्षा च स्थाणुभूता तपोधना ।।20।।

महाभारत – खण्ड–3 उद्योग पर्व

अम्बोपाख्यानपर्व, षडशीत्यधिकशततमोध्यायः

उसकी अथक तपस्या से प्रसन्न हो शिव ने उसे वरदान दिया कि वह अवश्य ही भीष्म का वध करेगी एवं इसे संभव करने के लिए वह स्त्री रूप में जन्म लेकर पुरुष रूप को प्राप्त करेगी।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer-Peer Reviewed, Refereed & Open Access International Journal - As per UGC Norms
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:4(4), April 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

छन्द्यमाना वरेणाथ सा वव्रे मत्पराजयम् ।

हनिष्यसीति तां देवः प्रत्युवाच मनस्विनीम् ।।8।।

महाभारत– खण्ड–3 उद्योग पर्व

अम्बोपाख्यानपर्व, सप्ताशीत्यधिकशततमोध्यायः

और कालांतर में यही अम्बा जो की शिखंडी के रूप में उत्पन्न हुई, वही भीष्म की मृत्यु एवं पांडवों की विजय का कारण बनती है।

यदि यहाँ भी देखा जाए तो वह शिव के वरदान से ही पुरुष बनी परंतु यदि हम इसे गौर से देखें तो अम्बा को जो शिव द्वारा वरदान प्राप्त हुए वह भी उसके स्वयं के स्वतंत्र निर्णयों के कारण थे। शाल्व राज के द्वारा त्याग एवं भीष्म के द्वारा अस्वीकृत अम्बा– ऋषि एवं मुनियों के सुझावनुसार अपने पिता काशी नरेश के पास वापस जा सकती थी।

अलं प्रव्रजितेनेह भद्रे श्रृणु हितं वचः ।

इतो गच्छस्व भद्रं ते पितुरेव निवेशनम् ।।5।।

प्रतिपत्स्यति राजा स पिता ते यदनन्तरम् ।

तत्र वत्स्यसि कल्याणि सुखं सर्वतगुणान्विता ।।6।।

महाभारत– खण्ड–3 उद्योग पर्व

अम्बोपाख्यानपर्व, पटसप्तत्यधिकशततमोध्यायः

यह मार्ग अम्बा के लिए सबसे सरल मार्ग था, परंतु उसके स्थान पर उसने तप कर के भीष्म को दंडित करना चुना। इसके उपरांत जब विष्णुअवतार परशुराम भी महायुद्ध कर के भीष्म को दंडित करने में विफल हुए तब भी वह भयभीत हो अपना निर्णय बदल सकती थी।

प्रत्यक्षमेतल्लोकानां सर्वेषामेव भाविनि ।

यथाशत्त्क्या मया युद्धं कृतं वै पौरुषं परम् ।।1।।

न चौवमपि शक्नोमि भीष्मं शस्त्रभृतां वरम् ।

विशेषयितुमत्यर्थमुत्तमास्त्राणि दर्शयन् ।।2।।

महाभारत– खण्ड–3 उद्योग पर्व

अम्बोपाख्यानपर्व, षडशीत्यधिकशततमोध्यायः

उसने इसके स्थान पर स्वयं ही तप कर स्वयं को अपने उद्योग के लिए सक्षम बनाने का निर्णय लिया और अपने लक्ष्य के लिए अथक प्रयास किया एवं स्वयं ही पुरुष शरीर प्राप्त करने का प्रयास किया। गंगा द्वारा श्रापित हो अगले जन्म में अपने आधे शरीर के नदी बन जाने के उपरान्त भी, अपने आधे शरीर से बनी हुई कन्या के रूप में उसने पुनः अत्यधिक कठोर तपस्या की।

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer-Peer Reviewed, Refereed & Open Access International Journal - As per UGC Norms
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:4(4), April 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

Cover Page

सा नदी वत्सभूम्यां तु प्रथिताम्बेति भारत ।

वार्षिकी ग्राहबहुला दुस्तीर्था कुटिला तथा ।।40।।

सा कन्या तपसा तेन देहार्धेनव्यजायत ।

नदी च राजन् वत्सेषु कन्या चौवाभवत् तदा ।।41।।

महाभारत– खण्ड–3 उद्योग पर्व

अम्बोपाख्यानपर्व, षडशीत्यधिकशततमोध्यायः

अम्बा उस कठिन बिंदु पर हार मान सकती थी, अपने लक्ष्य का त्याग कर सकती थी। परंतु दो जन्मों तक वह न केवल अपने लक्ष्य के लिए दृढ़ रही वरन् लगातार अपने घोर तप के माध्यम से प्रयासरत भी रही, तभी वह शिव से वरदान प्राप्त कर सकी,

तां देवो दर्शयामास शूलपाणिरूमापतिः ।

मध्ये तेषां महर्षीणां स्वेन रूपेण तापसीम् ।।7।।

महाभारत– खण्ड–3, उद्योग पर्व

अम्बोपाख्यानपर्व, सप्ताशीत्यधिकशततमोध्यायः

जिसके द्वारा वह अपने अगले जन्म में शिखंडी के रूप में स्त्री जन्म लेकर भी पुरुप स्वरूप को प्राप्त कर सकी। यह सत्य है कि शिखण्डिनी के रूप में उसके भाग्य में पुरुप होना लिखा था, परंतु यह भाग्य उसने स्वयं तय किया था, अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति, अथक प्रयासों, हार न मानने की दृढ़ता एवं लक्ष्य के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के द्वारा और ट्रांसजेंडर समूह के यह आदिपुरुप की न केवल ट्रॅांसजेण्डर समूह को यह सीख भी है कि परिवर्तन की राह में कठिनाइयाँ आएंगी, समाज प्रश्न करेगा, वक्त इतना कठिन भी हो सकता है कि जीवन त्यागने की ओर भी ले जाए परंतु पूर्व में किए गए प्रयास, दृढ़संकल्प एवं टिके रहने की आदत परिवर्तन स्वयं ही लेकर आएँगे एवं आपको उद्देश्य एवं लक्ष्य की प्राप्ति होगी। जीवन के कठिनतम क्षणों में भी यदि व्यक्ति अपने उद्देश्य के प्रति निष्ठावान बना रहे, तो वही संघर्ष अंततः उसकी सफलता का आधार बन जाता है। "वास्तव में, भाग्य भी उन्हीं का साथ देता है जो विपरीत परिस्थितियों में स्वयं अपने लिए मार्ग प्रशस्त करने का साहस रखते हैं।"

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. वेदव्यास दृ 'महाभारत'(हिन्दी अनुवाद सहित) गीताप्रेस, गोरखपुर 2020

2. पटनायक देवदत्त 'शिखण्डी एण्ड द अदर टेल दैट डू नॉट टेल यू' पेंग्विन पब्लिकेशन नई दिल्ली , 2024

3. विल्हेम दास अरमान, 'तृतीय प्रकृति पीपल आफ द थर्ड सेक्स' जेलीब्रीस कार्पोरेशन, फिलीपीन्स , 2004

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer-Peer Reviewed, Refereed & Open Access International Journal - As per UGC Norms
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:4(4), April 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

4. पचौरी विवेक "सोसियो पॉलिटिक्स स्टेटस आफ द ट्राँसजेण्डर फ्राम द वैदिक एज टू द न्यूक्लियर एज, 2020"

5. रूथ विनीता एण्ड सलीम किदवई, सेम सेक्स लव इन इण्डिया अ लिट्रेरी हिस्ट्री पेग्विन बुक्स न्यूयार्क– पालग्रेव– 2001

6. डागा शीला, 'किन्नर गाथा– कहानी समाज के अपरिचित लोगों की वाणी प्रकाशन, दिल्ली वर्ष 2020